शोध उत्कर्ष Shodh Utkarsh Online Available at https:// www.shodhutkarsh.com ISSN-2993-4648
वर्ष - 03 अंक– 12 अक्टूबर - दिसंबर - 2025 Impact factor– 03

मैला आँचल उपन्यास में संघर्ष चेतना एवं जीवन मूल्य

डॉ.लक्ष्मण भोसले
सह प्राध्यापक- हिंदी विभाग
सरकारी प्रथम श्रेणी महाविद्यालय, जेवर्गी-585310, गुलबर्गा जिला, कर्नाटक.

सारांश-
फणीश्वरनाथ रेणु का उपन्यास **मैला आँचल** (1954) हिंदी साहित्य का एक महत्वपूर्ण आंचलिक उपन्यास है, जिसे प्रेमचंद के **गोदान** के बाद सबसे महत्वपूर्ण उपन्यास माना जाता है[1]। उपन्यास की पृष्ठभूमि बिहार के पूर्णिया जिले का काल्पनिक गाँव मेरीगंज है, जो नेपाल सीमा से सटा पिछड़ा अंचल है। कथानायक डॉ. प्रशांत एक युवा डॉक्टर है, जो शहर से आकर इस गाँव में मलेरिया उन्मूलन के लिए कार्य करता है और ग्रामीण जीवन की वास्तविकताओं से रूबरू होता है। उपन्यास स्वतंत्रता के ठीक पहले और बाद के समय को चित्रित करता है, जहाँ गाँधीजी की हत्या तक की घटनाएँ शामिल हैं।

उपन्यास में कई प्रेम कथाएँ बुनी गई हैं – जैसे कमली और प्रशांत, बालदेव और लछमी, कालीचरण और मंगला आदि। ग्रामीण जीवन की जटिलताएँ – गरीबी, अशिक्षा, अंधविश्वास, जातिवाद, जमींदारी शोषण, राजनीतिक भ्रष्टाचार और सामाजिक कुरीतियाँ – जीवंत रूप से उभरती हैं। रेणु ने लोकभाषा, लोकगीतों और आंचलिक बोली का प्रयोग कर उपन्यास को अत्यंत यथार्थवादी बनाया है। उपन्यास का अंत गांधीजी की हत्या और ग्रामीण चेतना के जागरण के संकेत के साथ होता है, जो स्वतंत्रता के बाद के आदर्शों के पतन और नई उम्मीद को दर्शाता है[2]।

बीज शब्द:-मैला आँचल,फणीश्वरनाथ रेणु,आंचलिक उपन्यास,संघर्ष चेतना,जीवन मूल्य,ग्रामीण यथार्थ,जातिवाद,राजनीतिक चेतना,सामाजिक शोषण,गांधीवाद,दीन-दलित,लोकभाषा,स्वतंत्रोत्तर भारत,डॉ. प्रशांत,मेरीगंज।

मूल आलेख-

प्रस्तावना- फणीश्वरनाथ रेणु (1921-1977) हिंदी साहित्य के उन विरल कथाकारों में से एक हैं, जिन्होंने आंचलिकता को उपन्यास की मुख्य धारा बनाया। उनका प्रथम उपन्यास **मैला आँचल** न केवल आंचलिक उपन्यास की परंपरा का प्रवर्तक है, बल्कि स्वतंत्रोत्तर भारत के ग्रामीण समाज की संघर्ष चेतना और जीवन मूल्यों का गहन चित्रण भी प्रस्तुत करता है[3]। उपन्यास में रेणु ने बिहार के पूर्णिया अंचल के मेरीगंज गाँव को केंद्र में रखकर गरीबी, जातिवाद, जमींदारी, राजनीतिक अंतर्विरोधों और मानवीय संवेदनाओं को उकेरा है। यह उपन्यास प्रेमचंद की यथार्थवादी परंपरा को आगे बढ़ाते हुए लोकजीवन की सूक्ष्मताओं को उजागर करता है।

संघर्ष चेतना का स्वरूप-

मैला आँचल में संघर्ष चेतना बहुआयामी है। यह व्यक्तिगत, सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक स्तरों पर फैली हुई है। उपन्यास की शुरुआत मलेरिया जैसी महामारी से होती है, जो ग्रामीणों के जीवन का संघर्ष का प्रतीक है। डॉ. प्रशांत का आगमन आधुनिक चिकित्सा और विज्ञान का प्रतिनिधित्व करता है, जो अंधविश्वास और ओझा-गुणी की परंपरा से टकराता है। यह संघर्ष आधुनिकता और परंपरा के बीच का है[4]।

सामाजिक संघर्ष जातिवाद और वर्ण व्यवस्था में स्पष्ट है। गाँव में ऊँच-नीच का भेद स्पष्ट दिखता है – दलित और पिछड़े वर्गों का शोषण, अछूत प्रथा और सामाजिक बहिष्कार। उदाहरणस्वरूप, दलित बस्तियों में रहने वाले लोग ऊँची जातियों के जूतों का निर्माण करते हैं, लेकिन उन्हें अछूत माना जाता है। रेणु ने इस संघर्ष को दलितों के आत्माभिमान जागरण के रूप में चित्रित किया है, जहाँ वे कहते हैं कि "यह राब नहीं चलेगा"[5]।

आर्थिक संघर्ष जमींदारी प्रथा और गरीबी से जुड़ा है। गाँव के लोग कर्ज के बोझ तले दबे हैं, महाजन और जमींदार शोषण करते हैं। स्वतंत्रता के बाद भी भूमि सुधार नहीं होते, जिससे किसानों का संघर्ष जारी रहता है। राजनीतिक संघर्ष स्वतंत्रता आंदोलन के आदर्शों के पतन में दिखता है। गांधीवाद, समाजवाद और साम्यवाद के प्रभाव में गाँव के लोग बँटे हैं। बाबन दास जैसे पात्र गांधीवादी आदर्शों का प्रतिनिधित्व करते हैं, जबकि अन्य पात्र सत्ता की लालच में भ्रष्ट हो जाते हैं। गांधीजी की हत्या उपन्यास का क्लाइमेक्स है, जो आदर्श राजनीति के पतन का प्रतीक है[6]।

महिलाओं का संघर्ष भी महत्वपूर्ण है। कमली, लछमी जैसी नारियाँ सामाजिक बंधनों, विधवा प्रथा और शोषण से जूझती हैं। उनका प्रेम और संघर्ष मानवीय संवेदना को उजागर करता है। आदिवासी और संथाल समुदाय का संघर्ष स्थानीय दमन और राज्य की उपेक्षा से जुड़ा है, जो स्वतंत्र भारत में भी जारी है[7]।

रेणु की संघर्ष चेतना क्रांतिकारी नहीं, बल्कि यथार्थवादी है। वे कोई बड़ा समाधान नहीं देते, बल्कि आंशिक प्रगति और जागृति दिखाते हैं। डॉ. प्रशांत का गाँव से जुड़ाव और ग्रामीण चेतना का जागरण इस चेतना का सकारात्मक पक्ष है।

जीवन मूल्य का चित्रण-

मैला आँचल में जीवन मूल्य ग्रामीण संस्कृति की जड़ों से जुड़े हैं। रेणु ने मानवीयता, प्रेम, सहानुभूति, त्याग और संघटन को प्रमुख मूल्य के रूप में प्रस्तुत किया है। गांधीवादी मूल्य – अहिंसा, सत्य, स्वावलंबन – उपन्यास में प्रमुख हैं। बाबन दास जैसे पात्र इन मूल्यों का प्रतीक हैं, जबकि भ्रष्ट नेता इनके पतन को दर्शाते हैं[8]।

प्रेम जीवन का प्रमुख मूल्य है। उपन्यास में चार प्रेम कथाएँ हैं, जो विभिन्न वर्गों और परिस्थितियों में प्रेम की विविधता दिखाती हैं। कमली और प्रशांत का प्रेम आधुनिकता और परंपरा का मेल है, जबकि अन्य प्रेम कथाएँ सामाजिक बंधनों से संघर्ष करती हैं। प्रेम यहाँ शारीरिक नहीं, बल्कि मानवीय संवेदना का प्रतीक है।

सामुदायिक जीवन और लोक संस्कृति के मूल्य – लोकगीत, नौटंकी, कुश्ती, त्योहार – उपन्यास को जीवंत बनाते हैं। ये मूल्य ग्रामीणों की एकता और सांस्कृतिक धरोहर को दर्शाते हैं। सहयोग और सेवा का मूल्य डॉ. प्रशांत में दिखता है, जो दीन-दलितों की सेवा करता है।नकारात्मक मूल्यों – लालच, भ्रष्टाचार, जातिवाद – का चित्रण भी है, जो स्वतंत्रता के बाद के समाज की विडंबना है। रेणु इनके विरुद्ध आत्मचिंतन का आह्वान करते हैं। जीवन मूल्य अंततः मानवीय गरिमा, समानता और संघर्ष से मुक्ति की ओर इंगित करते हैं। उपन्यास का शीर्षक "मैला आँचल" भारत माता के आँचल की मैलापन दर्शाता है, लेकिन अंत में उम्मीद की किरण दिखती है – ग्राम चेतना का जागरण[9]। रेणु की भाषा और शिल्प इन मूल्यों को जीवंत बनाते हैं। लोकभाषा का प्रयोग पात्रों को यथार्थवादी बनाता है, जबकि वर्णन सांगीतिक और काव्यात्मक है।

समाज सुधार और प्रासंगिकता--उपन्यास सामाजिक सुधार का दस्तावेज है। जाति, लिंग और वर्ग भेद के विरुद्ध रेणु की चेतना स्पष्ट है। आज भी महंगाई, भ्रष्टाचार और धार्मिक विभेद जैसी समस्याएँ प्रासंगिक हैं। रेणु का संदेश है कि कलियुग में संघटन और नाम स्मरण ही सहारा है, लेकिन यथार्थ में संघर्ष ही मुक्ति का मार्ग है[10]।

फणीश्वरनाथ रेणु का उपन्यास मैला आँचल (1954) न केवल हिंदी साहित्य का एक महत्वपूर्ण आंचलिक दस्तावेज है, बल्कि स्वतंत्रोत्तर भारत के ग्रामीण समाज में व्याप्त कुरीतियों और सुधार की आवश्यकता का जीवंत चित्रण भी प्रस्तुत करता है। यह उपन्यास सामाजिक सुधार का एक मजबूत दस्तावेज है, जिसमें जाति, लिंग और वर्ग भेद के विरुद्ध रेणु की स्पष्ट चेतना झलकती है। मेरीगंज जैसे काल्पनिक गाँव के माध्यम से रेणु ने बिहार के पूर्णिया अंचल की वास्तविकताओं को उजागर किया, जो पूरे ग्रामीण भारत का प्रतिनिधित्व करता है। उपन्यास में डॉ. प्रशांत जैसे पात्र आधुनिकता और विज्ञान का प्रतीक बनकर अंधविश्वास, जातिवाद और शोषण से जूझते हैं, जबकि दलित और पिछड़े वर्गों के पात्र आत्माभिमान की जागृति दिखाते हैं।

उपन्यास जातिवाद की गहरी जड़ों को उजागर करता है। गाँव में ऊँच-नीच का भेद, अछूत प्रथा और सामाजिक बहिष्कार स्पष्ट रूप से चित्रित है। दलित बस्तियों के लोग ऊँची जातियों के लिए जूते बनाते हैं, लेकिन उन्हें अछूत माना जाता है। रेणु इस भेदभाव के विरुद्ध दलितों में जागृति दिखाते हैं, जहाँ वे कहते हैं कि "यह राब नहीं चलेगा"। लिंग भेद के संदर्भ में महिलाएँ – जैसे कमली, लछमी और लक्ष्मी – विधवा प्रथा, शोषण और सामाजिक बंधनों से संघर्ष करती हैं। वर्ग भेद जमींदारी प्रथा, महाजनी शोषण और गरीबी के रूप में उभरता है, जहाँ स्वतंत्रता के बाद भी भूमि सुधार नहीं होते और गरीब कर्ज के बोझ तले दबे रहते हैं। रेणु इन कुरीतियों की आलोचना करते हुए सुधार की ओर इशारा करते हैं – सेवा, सहानुभूति और संघटन के माध्यम से।

आज, 2025 में भी उपन्यास की ये समस्याएँ अत्यंत प्रासंगिक हैं। ग्रामीण भारत में जातिवाद अभी भी गहरा है। राष्ट्रीय अपराध रिकॉर्ड ब्यूरो के आँकड़ों और विभिन्न रिपोर्टों के अनुसार, दलितों और आदिवासियों के खिलाफ अत्याचार जारी हैं – मंदिर प्रवेश से वंचित करना, सामाजिक बहिष्कार और हिंसा आम है। उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश जैसे राज्यों में जातीय भेदभाव से जुड़े मामले बढ़े हैं। भ्रष्टाचार ग्रामीण योजनाओं – जैसे मनरेगा – में व्याप्त है, जहाँ फंड का दुरुपयोग और स्थानीय नेताओं की लूट आम बात है। महंगाई ने ग्रामीण गरीबों का जीना मुहाल कर दिया है; खाद्य पदार्थों, ईंधन और आवश्यक वस्तुओं की कीमतें बढ़ने से गरीबी की खाई गहरी हुई है। ग्रामीण क्षेत्रों में मुद्रास्फीति शहरी क्षेत्रों से अधिक प्रभावित करती है, जैसा कि हाल की रिपोर्टों में देखा गया है। धार्मिक विभेद और साम्प्रदायिक तनाव भी ग्रामीण समाज को बाँट रहे हैं, जो उपन्यास में गांधीजी की हत्या के बाद के पतन से जुड़ता है।

रेणु का संदेश गहन है – कलियुग में "संघे शक्ति कलयुगे" अर्थात् संघटन ही शक्ति है, और भगवान के नाम स्मरण से सहारा मिल सकता है। लेकिन यथार्थ में वे संघर्ष को मुक्ति का मार्ग बताते हैं। उपन्यास कोई क्रांतिकारी समाधान नहीं देता, बल्कि आंशिक प्रगति और जागृति पर जोर देता है। डॉ. प्रशांत का गाँव से जुड़ाव और ग्रामीण चेतना का जागरण इसी का प्रतीक है। आज के संदर्भ में यह संदेश और प्रासंगिक है, क्योंकि ग्रामीण भारत अभी भी गरीबी, बेरोजगारी, स्वास्थ्य और शिक्षा की कमी से जूझ रहा है। रेणु हमें याद दिलाते हैं कि सुधार बाहरी नहीं, आंतरिक जागृति और सामूहिक प्रयास से संभव है। मैला आँचल आज भी भारत माता के मैलेपन को उजागर करता है, लेकिन अंत में उम्मीद की किरण दिखाता है – संघर्ष और सेवा से समाज बदला जा सकता है। यह उपन्यास न केवल साहित्यिक कृति है, बल्कि सामाजिक चेतना का आह्वान है, जो वर्तमान भारत के लिए अनिवार्य है।

निष्कर्ष-मैला आँचल संघर्ष चेतना और जीवन मूल्यों का ऐसा चित्रण है जो स्वतंत्रोत्तर भारत की ग्रामीण वास्तविकता को उजागर करता है। रेणु ने यथार्थवाद को आंचलिकता से जोड़कर हिंदी उपन्यास को नई दिशा दी। उपन्यास न केवल सामाजिक कुरीतियों की आलोचना करता है, बल्कि मानवीय मूल्यों – प्रेम, सेवा, समानता – की पुनर्स्थापना का आह्वान भी करता है। आज के संदर्भ में यह उपन्यास और भी प्रासंगिक है, क्योंकि ग्रामीण भारत अभी भी उन संघर्षों से जूझ रहा है। रेणु का योगदान यह है कि उन्होंने गाँव को नायक बनाकर लोकतंत्र की जड़ों को मजबूत किया[11]।

****

संदर्भ सूची-

1. विकिपीडिया, "मैला आँचल", https://hi.wikipedia.org/wiki/मैला_आँचल (पृष्ठ जानकारी उपलब्ध)।
2. हिंदूकुंज, "मैला आँचल उपन्यास का सारांश", https://www.hindikunj.com/2024/09/maila-anchal-upanyas-ka-saransh-phanishwar-nath-renu.html।
3. भारत डिस्कवरी, "मैला आँचल - फणीश्वरनाथ रेणु", https://bharatdiscovery.org/india/मैला_आँचल_-फणीश्वरनाथ_रेणु।
4. समालोचन, "मैला आँचल: लोकवृत्त का कथा-आख्यान", https://samalochan.com/maila-aanchal/।
5. हिंदूकुंज, "मैला आँचल उपन्यास की तात्विक समीक्षा", https://www.hindikunj.com/2024/10/maila-anchal-upanyas-ki-tatvik-samiksha.html।
6. द वायर, "The Novel and the Nation: Revisiting Phanishwar Nath Renu's 'Maila Aanchal'", https://m.thewire.in/article/politics/the-novel-and-the-nation-revisiting-phanishwar-nath-renus-maila-aanchal-70-years-on।
7. फ्रंटलाइन, "Phanishwar Nath Renu and the Politics of the Village", https://frontline.thehindu.com/arts-and-culture/literature/phanishwar-nath-renu-maila-anchal-hindi-literature-village-india-anchalik-katha/article69655730.ece।
8. अपणी माटी, "शोध आलेख : मैला आँचल का संवेदना पक्ष", https://www.apnimaati.com/2022/06/blog-post_65.html।
9. यायावर, "पुस्तक समीक्षा : फणीश्वर नाथ 'रेणु' द्वारा रचित 'मैला आँचल'", https://www.yayawar.in/2015/09/book-review-maila-anchal-by-phanishwar-nath-renu.html।
10. सरल मटेरियल्स, "मैला आँचल में राजनैतिक चेतना", http://saralmaterials.com/content.php?id=41।
11. विकिपीडिया (अंग्रेजी), "Maila Anchal", https://en.wikipedia.org/wiki/Maila_Anchal।